3rd semester
Moral development
व्यक्ति में नैतिक विकास
Dr.Amar sir PSY (Assistant Professor)
Poster Maker

नैतिक विकास (Morale Development)

नैतिक विकास एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के नैतिक मूल्यों, सिद्धांतों, और व्यवहार का विकास होता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने, नैतिक निर्णय लेने, और नैतिक रूप से व्यवहार करने की क्षमता प्रदान करती है।

नैतिक विकास के चरण

1. **पूर्व-नैतिक चरण (Pre-Moral Stage):** इस चरण में, व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को नहीं समझता है।
2. **नैतिक चरण (Moral Stage):** इस चरण में, व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को समझने लगता है और नैतिक निर्णय लेने लगता है।
3. **उत्तर-नैतिक चरण (Post-Moral Stage):** इस चरण में, व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को पूरी तरह से समझता है और नैतिक रूप से व्यवहार करता है।

नैतिक विकास के सिद्धांत

1. **कोहलबर्ग का सिद्धांत (Kohlberg's Theory):** यह सिद्धांत नैतिक विकास को तीन चरणों में विभाजित करता है: पूर्व-नैतिक, नैतिक, और उत्तर-नैतिक।
2. **पियाजे का सिद्धांत (Piaget's Theory):** यह सिद्धांत नैतिक विकास को दो चरणों में विभाजित करता है: पूर्व-नैतिक और नैतिक।

निष्कर्ष

नैतिक विकास एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति को नैतिक मूल्यों, सिद्धांतों, और व्यवहार का विकास करने में मदद करती है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने, नैतिक निर्णय लेने, और नैतिक रूप से व्यवहार करने की क्षमता प्रदान करती है।

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (Kohlberg's Theory of Moral Development)

लॉरेंस कोहलबर्ग ने नैतिक विकास के लिए एक सिद्धांत प्रस्तुत किया है, जो कहता है कि नैतिक विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को समझने और उनका पालन करने की क्षमता प्राप्त करता है।

कोहलबर्ग के नैतिक विकास के चरण

1. **पूर्व-नैतिक चरण (Pre-Conventional Stage):** इस चरण में, व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को नहीं समझता है और अपने स्वयं के हितों के आधार पर निर्णय लेता है।

- चरण 1: दंड और आज्ञाकारिता अभिविन्यास (Punishment and Obedience Orientation)
- चरण 2: व्यक्तिगत हित अभिविन्यास (Individualism and Exchange Orientation)

2. **नैतिक चरण (Conventional Stage):** इस चरण में, व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को समझने लगता है और समाज के नियमों और अपेक्षाओं के आधार पर निर्णय लेता है।

- चरण 3: पारस्परिक संबंध अभिविन्यास (Good Interpersonal Relationships Orientation)

3. **उत्तर-नैतिक चरण (Post-Conventional Stage):** इस चरण में, व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को पूरी तरह से समझता है और अपने स्वयं के नैतिक सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लेता है।

- चरण 5: सामाजिक अनुबंध अभिविन्यास (Social Contract Orientation)
- चरण 6: सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास (Universal Ethical Principles Orientation)

कोहलबर्ग के सिद्धांत की विशेषताएं

- नैतिक विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है।
- प्रत्येक चरण पिछले चरण पर आधारित होता है।
- नैतिक विकास व्यक्ति की उम्र और अनुभव के साथ होता है।

निष्कर्ष

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत एक महत्वपूर्ण योगदान है जो नैतिक विकास की प्रक्रिया को समझने में मदद करता है। यह सिद्धांत बताता है कि नैतिक विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को समझने और उनका पालन करने की क्षमता प्राप्त करता है।

गिलीगन का नैतिक विकास सिद्धांत (Gilligan's Theory of Moral Development)

कैरोल गिलीगन ने नैतिक विकास के लिए एक सिद्धांत प्रस्तुत किया है, जो कहता है कि नैतिक विकास एक लिंग-आधारित प्रक्रिया है जिसमें पुरुष और महिलाएं अलग-अलग तरीके से नैतिक निर्णय लेते हैं।

गिलीगन के नैतिक विकास के चरण

गिलीगन के अनुसार, नैतिक विकास के तीन चरण हैं:

1. **प्राथमिक चरण (Pre-Conventional Stage):** इस चरण में, व्यक्ति अपने स्वयं के हितों के आधार पर निर्णय लेता है।
2. **द्वितीयक चरण (Conventional Stage):** इस चरण में, व्यक्ति समाज के नियमों और अपेक्षाओं के आधार पर निर्णय लेता है।
3. **उत्तर-नैतिक चरण (Post-Conventional Stage):** इस चरण में, व्यक्ति अपने स्वयं के नैतिक सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लेता है।

गिलीगन के अनुसार, पुरुष और महिलाएं अलग-अलग तरीके से नैतिक निर्णय लेते हैं:

- पुरुष: न्याय और अधिकारों के आधार पर निर्णय लेते हैं।
- महिलाएं: देखभाल और संबंधों के आधार पर निर्णय लेती हैं।

गिलीगन के सिद्धांत की विशेषताएं

- नैतिक विकास एक लिंग-आधारित प्रक्रिया है।
- पुरुष और महिलाएं अलग-अलग तरीके से नैतिक निर्णय लेते हैं।
- देखभाल और संबंधों को नैतिक विकास में महत्वपूर्ण माना जाता है।

निष्कर्ष

गिलीगन का नैतिक विकास सिद्धांत एक महत्वपूर्ण योगदान है जो नैतिक विकास की प्रक्रिया को समझने में मदद करता है। यह सिद्धांत बताता है कि नैतिक विकास एक लिंग-आधारित प्रक्रिया है जिसमें पुरुष और महिलाएं अलग-अलग तरीके से नैतिक निर्णय लेते हैं।

09:29